International Research Fellow Association's

September - 2017 E-ISSN: 2321-4953

IRFA's UNIRESEARCH

Multidisciplinary International E-Research Journal

Vol.- IX Issue - III

Indexed in DRJI & Indian Citation Index *Double Blind Peer Reviewed Journal*
UGC Approved List No. 63005 *Cosmos Impact Factor - 3.020 [2015]*

हिंदी भाषा एवं साहित्य संशोधन विशेषांक – भाग ३

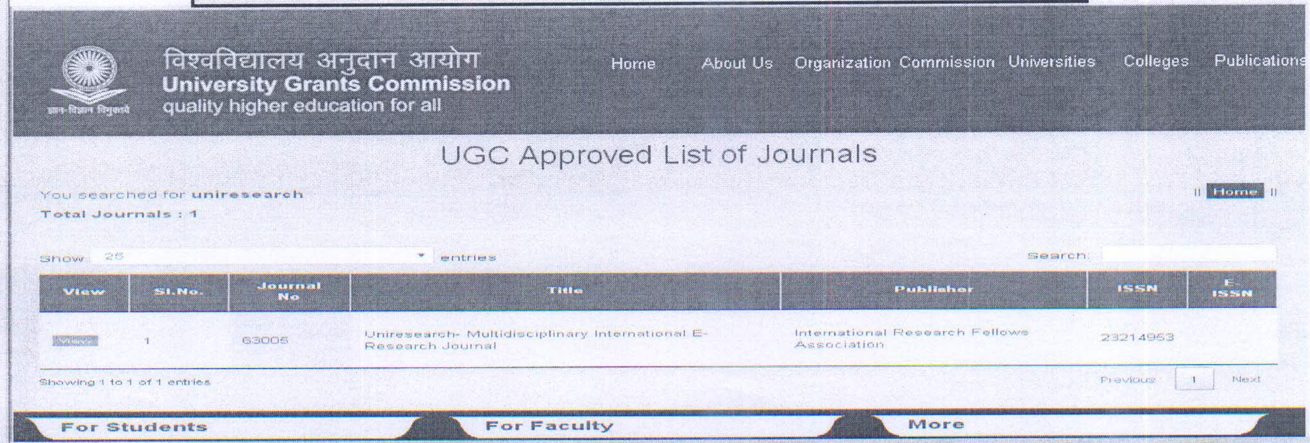

Guest Editor
Dr. Gajanan S. Wankhede
Asst. Professor, Dept. of Hindi,
Baliram Patil Arts, Science & Commerce College, Kinwat (Nanded)

Chief Editor:
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Asst. Professor, Dept. of Marathi,
M.G.V.'s Arts & Commerce College, Yeola.
Nashik [M. S.] India.

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details, visit us on: www.uniresearch.net.in

अनुक्रमणिका

अ.नं.	शोध निबंधाचे शीर्षक	लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
@	संपादकीय	- डॉ. गजानन वानखेडे	04
	हिंदी भाषा		
01	हिंदी भाषा का वैश्विक स्वरूप	- डॉ. संजय कांबळे	05
02	विश्व में हिंदी भाषा	- प्रा.एम. डी. नायकू	10
03	वैश्विकीकरण में भाषा का महत्त्व	- राजाराम तायडे	18
04	वैश्विकरण के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रभाषा हिंदी की प्रासंगिकता	- डॉ. करुणा अहिरे	22
05	दूरदर्शन और हिंदी	- डॉ. सुनिता कावळे	24
06	हिंदी में रोजगार के अवसर	- डॉ. महेंद्रसिंग पवार	28
	संत साहित्य		
07	विद्रोही मीरा	- डॉ. शिल्पा जीवरग	31
08	सुफी संतो का साहित्यिक योगदान	- सरला तुपे	34
09	संत नामदेव : एक अध्ययन	- डॉ. शशी साळूंके	37
10	हिंदी साहित्य में मराठी संत नामदेवजी का योगदान	- सुश्री वंदना पाटील	40
11	हिंदी भाषी संतो का साहित्यिक योगदान	- डॉ. रविंद्रनाथ पाटील	44
12	संत ज्ञानेश्वर एवं मीराबाई की भक्ति में सामाजिक समरसता का बोध	- डॉ. सविता चौधरी	48
13	मध्ययुगीन हिंदी साहित्य का आशावादी दृष्टिकोण	- डॉ. रमा दुधमांडे	53
	दलित साहित्य		
14	हिंदी दलित साहित्य में चेतना	- गजानन हरिभाऊ सर्वज्ञ	56
15	माता प्रसाद का नाटक अछूत का बेटा में दलित चिंतन	- डॉ. आनंद बक्षी	58
16	ओमप्रकाश वाल्मिकि के साहित्य में दलित विमर्श	- प्रा. सूर्यकांत आमलपुरे	62
	समकालीन साहित्य		
17	संवेदनाओं के स्पंदन : 'रिश्तों के एहसास'	- डॉ. रेखा गाजरे	69
18	दिनकर और कुसुमाग्रज के काव्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय भावना का अनुशीलन तुलनात्मक अध्ययन	- डॉ. वनिता पवार	75
19	प्रसाद और तांबे के काव्य में संगीत	- प्रा. अनंत केदारे	83
20	छायावादी काव्य-प्रकृतीपर चेतना का आरोप	- डॉ. शोभा रावत	90
21	हिंदी कथा एवं उपन्यास साहित्य में प्रेमचंद की रचनाओं की प्रासंगिकता	- डॉ. मनिष टेंभरे	96
22	बालसाहित्य की विशेषताओं के आधार पर 'हसते फुल महकते फुल' कृति का मूल्यांकन	- डॉ. संगीता जगताप	100
23	समकालीन कथासाहित्य निर्माण में नासिरा शर्मा का योगदान	- हरगोविंद टेंभरे	105

माता प्रसाद का नाटक 'अछूत का बेटा' में दलित चिंतन

डॉ. आनंद बक्षी
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, चिखलदरा
जिला. अमरावती

किसी भी विधा की शुरुवार आवश्यकता एवं समस्याओं की तीव्रता पर होती है दलित साहित्य भी इसी कारण से जन्मा साहित्य है। दलित साहित्य एक प्रतिबद्ध साहित्य है जो मनोरंजन या स्वांतः सुखाय के लिए न लिखा जाकर अपने समाज को जागरूक व उसमें चेतना का संचार कर उसे परिवर्तन के लिए प्रेरित करता है। दलित साहित्य की विभिन्न विधाओं में नाटक अपने आप में श्रेष्ठ है। क्योंकि नाटक एक ऐसी विधा है जिसका मंचन (प्रदर्शन) किया जाता है जिसके द्वारा वह आम जनता जो अभी भी पठन–पाठन (शिक्षा) से दूर है उसकी चित्तवृत्तियों में सीधे पहुँचता है।

दलित नाटक लेखन की शुरुआत 1927 में चाँद पत्रिका के अछूत अंक में प्रकाशित नाटक 'अछूतोद्धार' से माना जा सकता है। इस नाटक में जातिगत भेदभाव न होकर भाषायी स्तर पर भेदभाव को दिखाया गया है। इस नाटक के बाद हिंदी साहित्य में कई और नाटक लिखे गए। देखा जाए तो दलित साहित्य लेखन के मायने यही रहे हैं कि यह गैर दलितों और दलितों की मानसिकता को बदलें। इसी बदलाव की स्थिति को शब्दबद्ध करने का कार्य माता प्रसाद जी ने अपने नाटक 'अछूत का बेटा' में किया है। इस नाटक का पहला प्रकाशन वर्ष 1972 में हुआ। इस नाटक के केंद्र में अस्पृश्यता, छुआ–छूत, मंदिर प्रवेश, दहेज प्रथा और अंतर्जातीय विवाह को रखा गया हैं।

नाटककार की यह मान्यता है कि अनुसूचित जाति में शिक्षा के प्रसार से आई राजनीतिक जागरूकता के साथ समाज और सरकारी नौकरियों में ज्यों–ज्यों उच्च स्थान प्राप्त होता गया त्यों–त्यों उच्च वर्गों में जिनका उक्त क्षेत्रों में एकाधिकार रहा है इनके प्रति अनायास ही विद्वेष की भावना बढ़ती जायेगी। इसलिए जगह–जगह इन दोनों के बीच संघर्ष बढ़ रहे हैं। माता प्रसाद इस ओर भी अपना ध्यान केंद्रित करते हैं कि जब तक जाति–पाति की व्यवस्था को समाप्त नहीं किया जाता है तब तक सामाजिक संघर्ष को रोका नहीं जा सकता। इस संघर्ष को रोकने का सर्वोत्तम उपाय सभी जातियों के बीच 'रोटी–बेटी' का संबंध स्थापित करना है।

भारतीय समाज में वर्ण–व्यवस्था लागू होने के कारण अछूत के लिए सभी दरवाजे बंद थे। अछूत न धार्मिक और न ही सामाजिक क्षेत्र में अपना विकास कर सका। जो नाटक के इन संवाद से स्पष्ट है–

"पं हरिप्रसाद : अरे बाप रे! अनर्थ हो गया। नगई चमार के यहां रिश्तेदारी, तू मंदिर में आ गया। तूने तो मंदिर को ही अपवित्र कर दिया।
एक व्यक्ति : मारो इस अधर्मी को। कलयुग है कलयुग, जो न होना हो, हो जाए।
(चार–पाँच व्यक्ति बढ़कर शिवराम को हाथों से मारते हैं)
बहुत से लोग : लो, फिर मंदिर में धुसोगे ?
पं हरिप्रसाद : रे शूद्र ! मंदिर में आने का मजा देखा।
शिवराम : (रोते हुए) अरे भगवान के कथित आडम्बरी भक्तों, क्या मैं इंसान नहीं हूँ? क्या भगवान तुम्हारे बांटे हुए हैं?" 1

अछूत को हीन दृष्टि से देखा गया। उसे उन सभी कार्यों की मनाही थी जिससे वह अपना विकास कर सके। ब्राह्मणों ने उसे अपनी सेवा के लिए ही स्वीकार किया। उसे किसी भी प्रकार की सामग्री एकत्रित करने का अधिकार नहीं था। विकास के सभी रास्ते उसके लिए बंद कर दिये गए

ISSN 2321-4953
September – 2017
Vol. 9 Issue. 3

थे। इतना ही नहीं परिस्थितियों के बदलने पर अछूत को अवसर प्राप्त हुआ भी तो सामंतवादी मानसिकता के लोगों ने इनको पनपने नहीं दिया। जो संवादों में इस प्रकार स्पष्ट है–

"भूलन सिंह : अब तुम उसे पढ़ाकर क्या करोगे? उसे डिप्टी कलेक्टर तो बनना नहीं। पढ़ाई छुड़ा क्यों नहीं देते ? कुछ कमाने भी लगेगा।

जगदेव : बाबू, अभी तो वह आगे और पढ़ना चाहता है।

भूलन सिंह : मैं यह सब नहीं जानता। यदि हमारा काम नहीं चला, तो हम देखेंगे कहां निकलते–बैठते हो। जानवरों के लिए घास छीलना तक बंद कर दूंगा। आने–जाने का रास्ता नहीं मिल पाएगा। जिस जमीन पर तुम्हारा मकान है, वह भी हमारी जमीन में है। रहना मुश्किल कर दूंगा।"2

ब्राह्मणवाद के पोषक व सामंतवादी मानसिकता के लोगों ने अछूत वर्ण को कभी पनपने ही नहीं दिया। जब भी उसने अपने विकास के लिए कदम बढ़ाया उसे यातनाएं दी गईं। रूढ़िवादी मानसिकता के लोगों ने धर्म की आड़ में आकर विकास के सभी रास्ते उनके लिए बंद कर दिये।

नाटककार का ध्यान समाज के बदलाव की ओर भी गया है। रूढ़ियों से ग्रसित मानसिकता के लोगों का विरोध करने की शक्ति आज शिक्षित युवाओं में देखी जा सकती है। विरोध करने की यह शक्ति हर एक में तो नहीं लेकिन जो डॉ. अम्बेडकर,ज्योतिबा फुले आदि बहुजन नायकों के विचारों से परिचित हो गया उसमें उत्पन्न हो गई है। जो नाटक के इन संवादों में देख सकते हैं–

"शिवराम : बाबूजी, इसमें खेद की क्या बात है ? यह किसी एक व्यक्ति की नहीं, यह तो समाज की पुरानी भावनाओं का दिग्दर्शन था।

सोमेश्वर : हमें समाज में कर्णधारों, ठेकेदारों के विरुद्ध संघर्ष करना होगा। इसके लिए अनेक आपत्तियां झेलनी होंगी।

कमला देवी : क्यों भइया ? बाबूजी और माताजी भी तो पुराने विचारों के पोषक हैं। समाज से लड़ने से पहले अपने घर में ही आपको लड़ना पड़ेगा।

सोमेश्वर : कमला! मैं निश्चय कर चुका हूं। पहले घर से ही इसकी शुरुआत करूंगा। मैं कहना ही नहीं, काम करके दिखाना चाहता हूं। आजकल कुछ नेता स्टेज पर भाषण दे आते हैं कि छुआछूत न करें। लेकिन वही लोग स्वयं उस पर नहीं चलते। क्यों कमला, तुम तो मेरा साथ दोगी न ?

कमला देवी : भइया उस दिन मंदिर की घटना से तो मेरे हृदय में भी, ऐसे मंदिर में जाने को जी नहीं चाहता, जहां छोटे–बड़े, छुआछूत, हिन्दू–मुसलमान और ईसाई का भेद हो। लेकिन पिताजी के डर से जाती हूं। उनकी भावनाओं को दुखाना उचित नहीं समझती। वैसे भइया मैं हृदय से आपके साथ हूं।" 3

आज की युवा पीढ़ी रूढ़ियों को तोड़ना चाहती है। उनकी मान्यता है कि इसकी शुरुआत अपने घर से ही होनी चाहिए। ये रूढ़ियाँ व्यक्ति को कमजोर बनती है जिससे वह अपना और अपने समाज का विकास करने में असमर्थ हो जाता है। यह परंपराएं व्यक्ति को उसी संकीर्ण मानसिकता में जकड़े रहती है, जिससे वह बाहर नहीं निकल पाता है और अपने समाज के कमजोर वर्ग का शोषण करता है। इतना ही नहीं आज का युवा इस बात को भी सोचता है कि परिस्थितियों के साथ यदि समाज में बदलाव न हो तो वह समाज पीछे रह जाता है। जो संवाद में इस प्रकार स्पष्ट है–

"सोमेश्वर : पिताजी! समय और परिस्थितियों के अनुसार अगर समाज नहीं बदलता है, तो समाज में सड़ांध आने लगती है। आज हिन्दू धर्म में जाति–पाति के कारण यही सड़न पैदा हो गई है। इसी जातिवाद के कारण हम योग्यता की कदर नहीं कर रहे हैं। मनुष्य को पशु से भी बदतर समझ रहे हैं। इंसानियत का गला घोंट रहे हैं।" 4

ISSN 2321-4953
September – 2017
Vol. 9 Issue. 3

भारतीय समाज में आज भी जातिगत भेदभाव बना हुआ है, जिसके कारण योग्यता की कदर नहीं हो रही है। उच्च संस्थानों पर ब्राह्मणवादी व सामंतवादी मानसिकता के लोगों ने अपना आधिपत्य जमाया हुआ है। सदियों से हाशिये पर रहे लोगों के साथ जातिगत भेदभाव करके उसे आगे नहीं बढ़ने देना चाहते हैं। संविधान में मिले आरक्षण को भी वे पूर्णतः खत्म करने की फिराक में लगे हुए हैं। आज का युवा धर्म के ठेकेदारों का पुरजोर तरीके से विरोध करने के लिए तैयार है। वह इन ढकोसलों से बाहर निकलना चाहता है और इस दिखावटी चेहरे को अपने साथ लेकर चलने के लिए वह पूर्णतः तैयार नही है। जो नाटक के इन संवादों से स्पष्ट होता है–

"कमला : भले आपने याद दिलाई उस दिन मंदिर में आपके साथ दुर्व्यवहार की घटना ने मेरे हृदय में हिन्दू समाज के प्रति विद्रोह की भावना भर दी है। भेदभाव से घृणा हो गई है और जबसे आपका ही खून भइया को दिया गया है, तभी से मेरे दिमाग में उथल–पुथल मच गई है। खानदान और खून की उच्चता एक झूठा दिखावा मात्र मालूम हो रहा है।" 5

जिस सत्ता ने मनुष्य को बनाया उसने भेदभाव नहीं किया। एक मांस, एक रक्त प्रवाह और एक अस्थियों का पंजर बनाया। लेकिन इन धर्म के ठेकेदारों ने अपने स्वार्थ के लिए समाज में ऊँच–नीच की दीवार बना दी। उच्च वर्ण के लोग निम्न वर्ण से भेदभाव करने लगे। जिससे निम्न वर्ण दूसरे धर्म को स्वीकार करने के लिए अभिशप्त हो गए। जो इस प्रकार स्पष्ट है–

"सोमेश्वर : सुना है आपके यहां हिन्दू, मुसलमान और क्रिश्चियन के रहन–सहन और वेश–भूषा में कोई अंतर नहीं है ?

मरिअम्मा : यह सही है कि वहां पर सब एक ही से लगते हैं। नाम लेने पर ही मालूम होता है कि कौन क्या है ? वैसे मेरे ग्रैंड फादर हिन्दू ही थे। वे वहां की पुलेयर जाति के थे, जो अछूत गिनी जाती थी। एक बार एक कुएं पर नाम्बूदरीपाद ब्राह्मण ने पानी लेने से रोक दिया था, उसी समय मार–पीट हुई, इससे नाराज होकर कुछ लोगों के साथ उन्होंने क्रिश्चियन धर्म अपना लिया। अब हम क्रिश्चियन हैं।" 6

शूद्र वर्ण को हेय दृष्टि से देखा गया और उन्हें गंदे कार्य के लिए चुना जाने लगा। उच्च वर्ण इनसे अपनी सेवाएं लेने लगा। सभी सुख सुविधा के रास्ते इनके लिए बंद कर दिये गए। यदि वे इन सुविधाओं की माँग भी करते तो उच्च वर्ण इन पर तरह–तरह के अत्याचार करते। निम्न वर्ण आत्मसम्मान पाने के लिए धर्मातरण का सहारा लेने लगे। इतना ही नहीं समाज में चलाई गई प्रथा से आज स्वयं उच्च वर्ण भी नहीं बच पाया है। उसने समाज में ऐसे बीज बो दिये हैं जिसकी जड़ें मजबूती के साथ फैलती जा रही हैं और पूरे भारतीय समाज को गंदा कर रही हैं। जो इन वाक्यों में स्पष्ट है–"कमला : सिस्टर! हिन्दू समाज में हम ब्राह्मण हैं। प्रथा के अनुसार अच्छे कुल, गोत्र में शादी होनी चाहिए। इस वर्ग में लड़के अगर मिलते हैं, तो दहेज का मोल हजारों और लाखों में करते हैं।अगरकिसी तिगड़म से शादी हो भी जाए, तो बहुओं को घर में जलाकर मार डाला जाता है, फिर दहेज के लिए दूसरी जगह पर शादी कर लेते हैं। भइया इसके विरोधी हैं, इसलिए कही बात नहीं हो पाई है।" 7

दहेज प्रथा आज समाज में एक अभिशाप बन चुकी है। लोग इसका मोल अपनी संतान से लगाने लगे हैं। पालन–पोषण से लेकर पढ़ाई के खर्च तक का सारा कच्चा–चिट्ठा जोड़कर वधू पक्ष के सामने रख देते हैं। यदि किसी तरह बात बन भी गई तो वधू को परेशान करते हैं या बहू आत्महत्या करने के लिए विवश हो जाती है। दहेज प्रथा आज हर धर्म, समुदाय के साथ जुड़ी है। इस समस्या से निजात पाने के लिए अंतर्जातीय विवाह को उचित समझा गया है। जो इन संवादों में उद्धत है–

"सोमेश्वर : माता जी! जब तक हम अच्छी रकम नहीं दे सकते, कमला की शादी अच्छी जगह नहीं हो सकती। कहीं से दहेज का आप इंतजाम करें भी, तो कमला इसे पसंद नहीं करेगी। हम अपनी जाति और अच्छे खानदान की झूठी शान के दिखावे में पड़े रहेंगे, तो यही होता रहेगा। तब तक अंतर्जातीय शादियां नहीं होंगी, समाज में दहेज चलता रहेगा, अनमेल विवाह होते रहेंगे। एक जाति दूसरी जाति को घृणा और ईर्ष्या की दृष्टि से देखती रहेगी और संघर्ष होता रहेगा।" 8

जब तक व्यक्ति अपनी झूठी शान और इस दिखावे वाले समाज में जीता रहेगा तब तक इस प्रथा का अंत नहीं किया जा सकता है। अनमेल विवाह होते रहेंगे तथा समाज में ईर्ष्या बनी रहेगी। और प्रतिदिन कोई न कोई नारी अपनी जीवन यात्रा समाप्त करेगी भारतीय समाज से जात–पात का प्रचलन कभी समाप्त नहीं होगा। बल्कि दीमक की तरह ओ हमें और भी खेकला करेगी।

अतः कह सकते हैं कि माता प्रसाद जी ने 'अछूत का बेटा' नाटक में सामाजिक मुद्दों को उठाया है। ये ऐसे मुद्दे हैं जो आज भी हसिए के समाज को पीछे धकेले हुए हैं । यदि हमें एक बेहतर समाज बनाना है तो, दलित और स्त्री सभी को समान अवसर उपलब्ध कराने के साथ उन्हें सम्मान देना आवश्यक है।

आधार ग्रंथः

1. अछूत का बेटा. प्रसाद. माता 2013 32/3, पश्चिमपुरी,नई दिल्ली : सम्यक प्रकाशन
2. अछूत का बेटा, पृ. 15
3. अछूत का बेटा, पृ 23
4. अछूत का बेटा, पृ. 25
5. अछूत का बेटा, पृ. 37
6. अछूत का बेटा, पृ. 43
7. अछूत का बेटा, पृ. 46
8. अछूत का बेटा, पृ. 48–49
9. अछूत का बेटा, पृ. 50

संदर्भ ग्रंथः

1. डॉ. मीनू. रजत रानी (2010). हिंदी दलित कथा–साहित्य अवधारणा और विधाएं. 4697/3, 21ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली : अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड.
2. दलित–आदिवादी रंगमंच विशेषांक.रंगवार्ता. रंगमंच एवं विविध कला रूपों की त्रैमासिक पत्रिका. अंक–4, वर्ष–1, अगस्त–अक्तूबर 2012 (त्रैमासिक)